Hindi
Explore – Journal of Research for UG and PG Students
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

'दिनकर का राष्ट्रधर्म: आज के संदर्भ में'

अमृता कुमारी • बेर्नादेत्त टोप्पो • मीनू कुमारी • शरण सहेली

Received : December 2010
Accepted : February 2011
Corresponding Author : Sharan Saheli

Abstract : *भारतीय साहित्य के कालजयी कवियों में अग्रगण्य राष्ट्रकवि 'दिनकर' का रचना-संसार हिंदी का ऐश्वर्य है। सरस्वती के इस वरदपुत्र का पूरा नाम रामधारी सिंह 'दिनकर' था। राष्ट्र के प्रति उनकी सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप भारतीय मनीषा ने उन्हें राष्ट्रकवि विशेषण से अलंकृत किया था। यह नाम हिन्दी साहित्य के किसी भी विद्यार्थी के लिए, हरेक भारतीय के लिए जाना-पहचाना, बहुत ही अपना सा लगनेवाला नाम है। वजह यह है कि दिनकर ने अपनी लेखनी से सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने राष्ट्रीय गौरव एवं मान-सम्मान का शंखनाद करके संपूर्ण देश में अपनी ओजस्वी वाणी से राष्ट्रप्रेम की एक ऐसी लहर पैदा कर दी थी, जो आज भी हमें प्रेरणा देती है। प्रश्नावली द्वारा स्नातक् तृतीय वर्ष हिन्दी प्रतिष्ठा की छात्राओं के विचार जानने का प्रयास किया गया। विशेष रूप से यह जानने का प्रयास किया गया कि दिनकर की कविता क्या आज भी युवाओं के बीच उतनी ही लोकप्रिय है जितनी अपने रचनाकाल में थी? विशेष रूप से यह भी जानने का प्रयास किया गया कि क्या दिनकर का काव्य आज भी युवापीढ़ी में राष्ट्रीय मूल्यों को स्थापित करने में सक्षम है?*

संकेत शब्द:- *राष्ट्रधर्म, साहित्यिक अवदान, उद्‌बोधन, क्रान्ति, युग-परिवर्तन ।*

अमृता कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2008–2011), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

बेर्नादेत्त टोप्पो
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2008–2011), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

मीनू कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2008–2011), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

शरण सहेली
एसोसिएट प्रोफेसर-सह-अध्यक्षा, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : sharansaheli@gmail.com

भूमिका:

''मैं न वह, जो स्वप्न पर केवल सही करते,
आग में उसको गला लोहा बनाता हूँ।
और उसपर नींव रखता हूँ नये घर की,
इस तरह दीवार फौलादी उठाता हूँ।।''

- रामधारी सिंह दिनकर

सरस्वती के वरद्‌पुत्र दिनकर का पूरा नाम रामधारी सिंह 'दिनकर' था। राष्ट्र के प्रति उनकी अतुलनीय सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप भारतीय मनीषा ने उन्हें 'राष्ट्रकवि' विशेषण से अलंकृत किया। वजह यह है कि दिनकर ने अपनी लेखनी से सामाजिक बुराइयों के विरूद्ध आजीवन संघर्ष किया। उन्होंने राष्ट्रीय अस्मिता एवं आन, बान, शान के लिए मर-मिटने हेतु देशवासियों में ललक जगायी। अपने

साहित्यक योगदान हेतु 'राष्ट्रकवि' को अनेक राज्य-स्तरीय, केन्द्रीय तथा राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित किया जाना ही अपने समकालीनों के बीच उनकी श्रेष्ठता को दर्शाता है। अपने जीवनकाल में ही किसी भी साहित्यकार के लिये ये उपलब्धियाँ उसकी महानता तथा लोकप्रियता की परिचायक हैं।

आज के इस अर्थ-प्रधान युग में साहित्य को अनुत्पादक कार्य की संज्ञा दी जाती है, जो समाज के लिए चुनौती का विषय है। हमारा विश्वास है कि साहित्य ही तो वह दस्तावेज है, जो हर अग्रज पीढ़ी अपने बाद आनेवाली पीढ़ी को विरासत में सौंपती है। साहित्य ही तो वह दर्पण है, जिसमें हम अपने अतीत का साक्षात्कार करते हैं, वर्तमान के लिए सबक लेते है और भव्य भविष्य की नींव रखते हैं। फिर यह अनुत्पादक कार्य कैसे हुआ? हाँ, यह अवश्य है कि उसकी उत्पादकता अगरू-धूम की तरह है, जो अपनी भीनी-भीनी सुगंध से घर को मंदिर बना देता है। दिनकर ने अपने समकालीन समाज की भयानक एवं लोमहर्षक सच्चाइयों का अनुभव कर अपनी लेखनी से बुराइयों के विरूद्ध संघर्ष किया। उन्होंने अपने व्यक्तित्व में सम्पूर्ण भारत को समाहित कर लिया था। सूरज का ब्याह, कलम या तलवार, परशुराम की प्रतीक्षा, समर शेष है, कलम आज उनकी जय बोल जैसी कविताएँ स्कूली पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग हैं क्योंकि दिनकर आज भी प्रासंगिक है। साढ़े तीन दशक बीत जाने के बाद भी कवि की लोकप्रियता कम नहीं हुई है। कुरूक्षेत्र, रश्मिरथी, हुँकार, रेणुका, उर्वशी, रसवंती और संस्कृति के चार अध्याय जैसी उनकी रचनाएँ कालजयी हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं को दार्शनिकता, निराशा आदि से मुक्त रखा और उनमें सामाजिक चेतना की स्थापना की। ओज, पौरूष, विद्रोह, आक्रोश जैसे गुण उनके व्यक्तित्व में विद्यमान थे। यही स्वर उनकी रचनाओं में भी प्रतिध्वनित होता है। कविवर रामधारी सिंह 'दिनकर' ने ऐसे अनेक उद्‌बोधन गीत गाये हैं जिनमें जनजीवन को सचेत, सचेष्ट एवं सक्रिय बनाने की तीव्र लालसा भरी हुई है, जिनमे कर्मण्यता और कर्मठता की उत्कट प्रेरणा भरी हुई है और जिनमें सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं के विरूद्ध तीव्र विद्रोह एवं उग्र क्रान्ति का गंभीर उद्‌घोष सुनाई पड़ता है। कवि दिनकर ऐसे विद्रोही गीत स्वतंत्रता पूर्व से लेकर अपने जीवन के अंतिम दिनों तक गाते रहे हैं। उनके क्रांतिकारी गीत आज भी जनजीवन को पुरूषार्थ, दृढ़ता, ओजस्विता एवं जागृति की ओर उन्मुख करके एक नूतन समाज-सृजन का संदेश देते हैं। दिनकर साहित्य में इतिहास, मिथक और यथार्थ का इतना सघन सार्थक सम्मिलन पाठकों को मंत्र-मुग्ध बना देता है। 'विभा-पुत्र' दिनकर ने खड़ी बोली हिन्दी भाषा को अद्‌भुत ऊँचाईयों तक पहुँचाया है। छायावादोत्तर स्वच्छंद धारा में उन्होंने ऐसी हृदयग्राह्य ओजमयी राष्ट्रीयता की धारा प्रवाहित की जिसमें सम्पूर्ण भारतवासी सराबोर हो गए।

दिनकर की राष्ट्रीय भावना कई अर्थों में विशिष्ट है। उन्होंने सामाजिक विसंगतियों को चुनौती के रूप में ग्रहण किया और अपनी रचनाओं में खुलकर क्रांति का शंखनाद किया। उन्होंने पराधीनता की बेबसी पर आवाज तो उठाई ही, साथ में जातिवाद तथा नारी-शोषण को भी अपनी रचनाओं का आधार बनाया। गुलामी के वातावरण में विदेशी शासकों के शोषण और अत्याचारों की प्रतिक्रिया का शक्तिशाली रूप दिनकर काव्य में प्रतिबिम्बित है-

''रण की घड़ी, जलन की बेला, तो मैं भी कुछ गाऊँगा ।
सुलग रही यदि शिखा यज्ञ की, अपना हवन चढ़ाऊँगा ।।

(दिनकर 2002, 181)

सन् 1962 में चीन के आक्रमण के समय दिनकर के हृदय में उग्र राष्ट्रवाद की वेगवती धारा उमड़ पड़ी, जिसका प्रतिफलन 'परशुराम की प्रतीक्षा' है। इसकी कविताएँ राष्ट्रवाद का शंखनाद करती हैं और सामूहिक शक्ति से चीन आक्रमण को विफल करने की प्रेरणा देती है। कवि का आक्रोश केवल चीन के आक्रमण के प्रति ही नहीं है बल्कि वे इसके लिए भारतीय राजतंत्र और विचार-दर्शन को भी उत्तरदायी मानते हैं। भारत की शांति-नीति को अव्यवहारिक मानते हुए कवि कहता है-

''क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो ।
उसको क्या जो दंत-हीन, विष-रहित विनीत सरल हो ।।

(दिनकर 2004, 25)

समाज में व्याप्त जातिवाद की कुप्रथा पर 'रश्मिरथी' में कर्ण के माध्यम से उन्होंने प्रहार किया है-

''जाति-जाति वे रटते, जिनकी पूँजी पाखंड ।
मैं क्या जानूँ जाति, जाति हैं ये मेरे भुजदंड ।।

(दिनकर 1975, 15)

स्त्रियों के शोषण, पूँजीपतियों के भ्रष्टाचार और बच्चों की भूख का ऐसा जीवंत वर्णन है, जो पत्थर को भी पिघला सकता है-

''दूध-दूध ओ वत्स, मंदिरों में बहरें पाषाण यहाँ हैं।
दूध-दूध तारे बोलो, इन बच्चों के भगवान कहाँ हैं ?''

स्वराज्य प्राप्ति के बाद जब सारी सुख-सुविधाएँ सिर्फ राजनेताओं, मंत्रियों और बड़े-बड़े अधिकारियों तक सीमित रह गई और दिल्ली उनका केन्द्र बनी तो कवि ने उन्हें फटकार लगाते हुए कहा-

''जो सत्य जानकर भी न सत्य कहता है,
या किसी लाभ से विवश मूक रहता है,
उस कुटिल राजतंत्री कदर्य को धिक है,
वह मूक सत्य-हन्ता कम नहीं अधिक है।''

(दिनकर 1965, 03)

दिनकर की कविताओं में विश्व-कल्याण की महती भावना की अभिव्यक्ति भी हुई है। वे विश्व-क्रांति द्वारा शांति चाहते हैं-

''शांति नहीं तब तक, जब-तक
सुख-भाग न नर का सम हो,
नहीं किसी को बहुत अधिक हो,
नहीं किसी को कम हो।''

(दिनकर 2004, 23)

साहित्यकार युगद्रष्टा ही नहीं युग-स्रष्टा भी होता है। अपनी रचनाओं में दिनकरजी ने शाश्वत् मूल्यों की युगानुकूल व्याख्या की है। इसीलिए तो वे अपने युग के प्रतिनिधि कवि कहे जाते हैं। उनकी भाषा में ओज की रवानी के साथ-साथ क्रांति की ज्वाला है। प्रत्येक पंक्ति में भारतीय संस्कृति और सभ्यता का उद्वेलन है, चेतना के तारों को झंकृत करने की शक्ति है, और है जन-जीवन के जागरण का स्वर। नव-जागरण के उद्घोष, भारत के महिमाशाली अतीत के चित्रण और राष्ट्रीयता की भावना की चिंतनमुक्त ओजस्वी अभिव्यक्ति ने उनके काव्य को कीर्त्तिमय बनाया है और यही उनकी प्रासंगिकता का कारण है। आधुनिक परिवर्त्तन-कामी युवा-पीढ़ी उनकी कविताओं से बहुमूल्य शिक्षा ग्रहण कर सकती है।

प्रत्येक युग के अपने-अपने संस्कार होते हैं। आध्यात्मिक गुरू भारतवर्ष भी संस्कारों से सम्पन्न एक ऐसा देश है जो अपने कर्णधारों में चेतना, बुद्धि, विवेक, प्रज्ञा एवं आत्मबल का संचार करता है। भारतीय सूर्य रामधारी सिंह दिनकर ने अपने पदबंधों द्वरा भारतवासियों में अपने राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यपरायणता के गुणों का समावेश किया है। उन्होंने अपनी लेखनी से राष्ट्र की वकालत करके अपने कर्त्तव्य का परिचय दिया है। रामधारी सिंह दिनकर ने अपनी रचनाओं में युवाओं के हित हेतु मिथ का प्रयोग किया है। इसी संदर्भ में उन्होंने द्वापर के एक महान चरित्र को उदाहृत किया है, जिन्हें महारथी कर्ण के नाम से जाना जाता है। दिनकर ने उनकी दानशील प्रवृति की व्याख्या करके कर्ण के आत्मविश्वास, आत्मबल एवं आत्मनिर्भरता को सराहा है। मिथ के सार्थक प्रयोग से उनका एकमात्र उद्देश्य नवयुवकों में अपने देश की आन-बान शान के लिए मर मिटने की उत्कट चाह में वृद्धि करना है। वे राष्ट्रीयता एवं स्वतंत्रता के सजग प्रहरी है। पीड़ित के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए उन्होंने लिखा भी है-

''समर शेष है, इस स्वराज्य को सत्य बताना होगा।
जिसका है यह न्यास उसे सत्वर पहुँचाना होगा ।।''

चूंकि लय 'राग' का द्योतक है और दिनकर जी की सभी कविताएँ रागात्मक हैं। वही लय मानव-हृदय को रसान्वित करता है, कभी वह मानव मन में करूणा का संचार कर देता है, तो कभी वीर रस का गौरवगान करने लगता है। उन्होंने नाद सौंदर्य से सुसज्जित इन समस्त विधानों के द्वारा भारतवासियों के हृदय को झंकृत कर दिया है। चेतना को गति प्रदान करने में भी उनकी कविताएँ सफल रही हैं। जब हमारा देश राजतंत्र से लोकतंत्रीय व्यवस्था में रूपांतरित हुआ था, तब दिनकर जी के बोल कुछ इस प्रकार थे-

''दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो ।
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है ।।''

दिनकर जी ने व्यवहारिकता की व्याख्या करते हुए बहुअर्थक आयाम देने वाली सूक्तियों की रचना की, जो मानव जीवन को सुखी बनाने में सर्वथा समर्थ एवं सक्षम रही हैं। उन्होंने क्षमा, दया, त्याग, धर्म की बहुत ही सुसंगत आधुनिक परिभाषा भी दी है, जो इस प्रकार है-

''अधिकार खोकर बैठ रहना यह महा दुष्कर्म है ।
न्यायार्थ अपने बंधु को भी दंड देना धर्म है ।।''

उनके रचना-संसार को भली भाँति समझने हेतु स्वयं उनकी यह स्वीकारोक्ति दृष्टव्य है-

''संस्कारों से मैं कला के सामाजिक पक्ष का प्रेमी बन गया था किन्तु मेरा मन भी चाहता था कि गर्जन-तर्जन से दूर रहूँ और केवल ऐसी कविताएँ लिखूँ जिसमें कोमलता एवं कल्पना का उभार हो... और सुयश तो मुझे 'हुँकार' से ही मिला किन्तु आत्मा अब भी 'रसवन्ती' में बसती है। राष्ट्रीयता मेरे व्यक्तित्त्व के भीतर से नहीं जाती। उसने बाहर से आकर मुझे आक्रांत किया है।''

उद्देश्य:

(क) सामान्य:-

- यह पता लगाना कि दिनकर की कविताएँ युवा-पीढ़ी के बीच आज भी उतनी लोकप्रिय हैं ?
- राष्ट्रकवि दिनकर के देशभक्ति संबंधी रचनाओं के अध्ययनोपरांत युवा-पीढ़ी पर पड़नेवाले प्रभावों के आलोक में जाना।

(ख) विशिष्ट:-

- वर्तमान युवापीढ़ी को चैतन्यता एवं सक्रियता प्रदान कर मातृभूमि के ऋण को चुकाने के लिए कर्तव्यबोध जागृत करना।
- हिन्दी साहित्य के पाठक की आशंकाओं और अपेक्षाओं को जानना तथा उनके विचारों के आधार पर साहित्य की उत्पादकता तथा उपयोगिता के संदर्भ में सकारात्मक सामाजिक सोच विकसित करना।

अध्ययन पद्धति :

- प्राथमिक पद्धति- इसके अंतर्गत प्रश्नावली तथा साक्षात्कार प्रणाली का प्रयोग किया गया है। उस दौरान जो तथ्य उभर कर आए, उन सबका संकलन किया गया।
- सहायक पद्धति- इसके अंतर्गत पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ और इंटरनेट का प्रयोग किया गया है।

इस परियोजना के विषय का सर्वेक्षण पटना वीमेंस कॉलेज, जे० डी० वीमेंस कॉलेज, मगध महिला कॉलेज, पटना कॉलेज, वाणिज्य महाविद्यालय की हिन्दी प्रतिष्ठा की छात्राओं को केन्द्र में रखकर किया गया हैं। उत्तरदाताओं के विचार को प्रतिशत रूप में प्रदर्शित कर बार ग्राफ द्वारा दिखाया गया है।

परिणाम एवं परिचर्चा:-

प्रश्न संख्या-1: क्या दिनकर का व्यक्तित्व युवापीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत है ?

कुल अंक	हाँ
50	46

कुल %	हाँ %
100%	92%

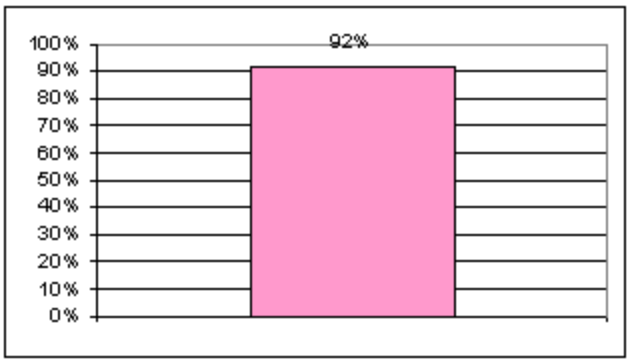

कुल विद्यार्थियों में से 92% का मानना है कि दिनकर आज भी प्रासंगिक हैं। चूँकि दिनकर का स्वयं भी मानना है कि वो 'जिन्दगी, जोश और जवानी' के गायक हैं। दिनकर के अवसान के बाद उनकी लोकप्रियता पर आंशिक असर ही पड़ा है। उनकी स्मृतियाँ समय की धूल से धूमिल नहीं हुई है।

प्रश्न संख्या-2: दिनकर के साहित्यिक अवदान हेतु हासिल उपलब्धियाँ:-

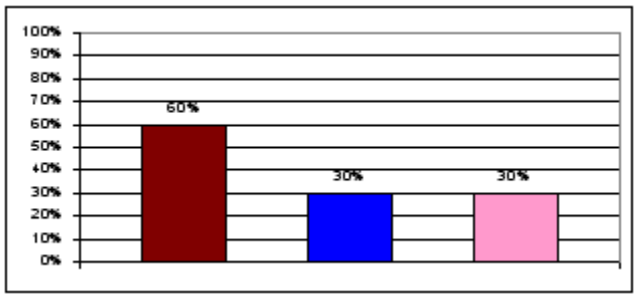

संकेत शब्द

- **राज्यस्तरीय सम्मान-**
  1. भूदेव स्वर्ण पदक : मैट्रिक में प्रथम श्रेणी हेतु
  2. सब रजिस्ट्रार : 1934 ईस्वी
  3. उपनिदेशक : 1934 ईस्वी (जनसंपर्क विभाग)
  4. स्नातकोत्तर हिन्दी विभागाध्यक्ष : लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

5. डी० लिट्० की मानद उपाधि : भागलपुर विश्वविद्यालय
6. कुलपति : अब तिलका मांझी विश्वविद्यालय भागलपुर

- **केन्द्रीय सम्मान-**
  1. राज्यसभा के मनोनीत सदस्य : 1952 ईस्वी
  2. हिन्दी सलाहकार : केन्द्र सरकार, दिल्ली
  3. सदस्य : राष्ट्रभाषा आयोग
- **राष्ट्रीय सम्मान-**
  1. ज्ञानपीठ पुरस्कार : 1973 ईस्वी (उर्वशी हेतु)
  2. पद्मभूषण : 1959 ईस्वी
  3. साहित्य अकादमी पुरस्कार : 1959 ईस्वी (संस्कृति के चार अध्याय हेतु)

साहित्यिक योगदान हेतु 'राष्ट्रकवि' को अनेक राज्य-स्तरीय, केन्द्रीय तथा राष्ट्रीय सम्मानों से विभूषित किया जाना ही अपने समकालीनों के बीच उनकी श्रेष्ठता को दर्शाता है। अपने जीवनकाल में ही किसी भी साहित्यकार के लिये ये उपलब्धियाँ उसकी महानता तथा लोकप्रियता की परिचायक हैं।

प्रश्न संख्या -3: दिनकर काव्य के अध्ययन के उपरांत भारत के युवाओं में किस प्रकार का (सकारात्मक) बदलाव आएगा ?

कुल अंक	हाँ
50	35

कुल %	हाँ %
100%	70%

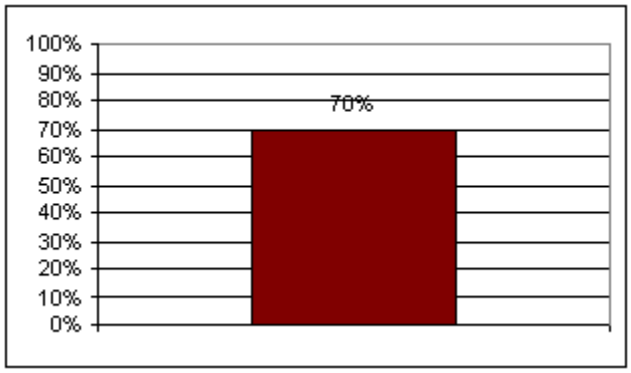

जब हम तीसरे प्रश्न को लेते हैं तो हमें सकारात्मक उत्तर अधिक मिला। 70% युवापीढ़ी जो परिवर्तनकामी हैं, वे दिनकर साहित्य को भारतीय लोकतंत्र की सशक्त वाणी के रूप में मानते हैं, जबकि 30% का मानना है कि स्थिति वही पुरानी बनी रहेगी। छात्राओं का तर्क यह है कि रूख आशावादी रखें तो परिणाम सकारात्मक आएँगे।

प्रश्न संख्या-4 : क्या दिनकर का काव्य आज भी साहित्यिक के साथ-साथ सांस्कृतिक महत्त्व का अधिकारी है?

कुल अंक	हाँ
50	45

कुल %	हाँ %
100%	90%

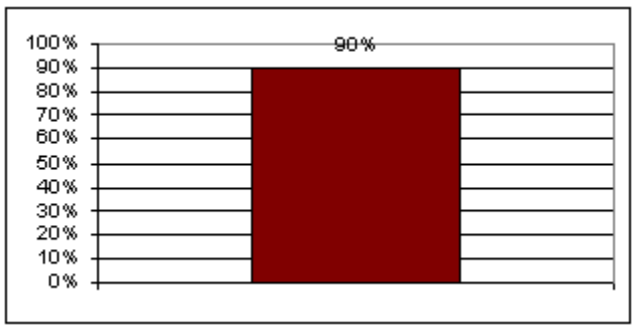

अधिकांश छात्राओं का मानना है कि दिनकर-साहित्य चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना करने की कला सिखाता है। कुछ का मानना है कि यह परिस्थितियों पर निर्भर करता है। बहुमत का मानना है कि युवापीढ़ी को जिन्हें 'परिवर्तन की चाह है' दिनकर के काव्याध्ययन द्वारा सीख ग्रहण करनी चाहिए।

प्रश्न संख्या-5: क्या दिनकर का काव्य भारत की युवापीढ़ी में राष्ट्रधर्म/राष्ट्रीय मूल्य को स्थापित करने में सक्षम है ?

कुल अंक	हाँ
50	40

कुल %	हाँ %
100%	80%

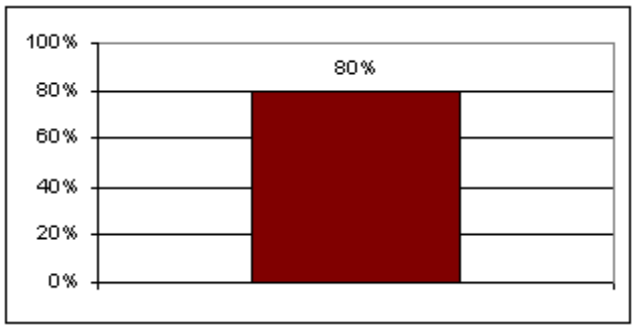

विद्यार्थियों की राय है कि आज भी राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की जयन्ती का धूमधाम से मनाया जाना ही

स्वयं अपने में इस बात का प्रमाण है कि दिनकर की उपयोगिता/प्रासंगिकता अभी भी समाप्त नहीं हुई है। यदि भारत की सामाजिक, राजनीतिक व्यवस्था को देखें तो दिनकर का साहित्य सचमुच एक सबक है।

प्रश्न संख्या-6 : दिनकर साहित्य संबंधी ज्ञानार्जन के स्रोतः-

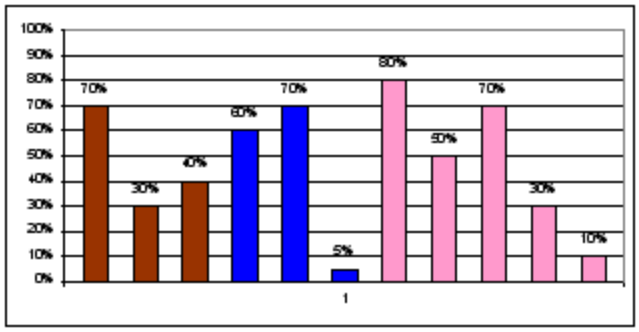

संकेत शब्द

प्रिंट मीडिया	**निजी/व्यक्तिगत**
अखबार	वर्ग-अध्याय
पत्र-पत्रिका	मित्र-मंडली
पुस्तकालय	स्वाध्याय
इलेक्ट्रानिक मीडिया	**निजी/व्यक्तिगत**
रेडियो	सेमिनार/कार्यशाला
दूरदर्शन	भ्रमण/प्रदर्शनी
इंटरनेट	

मुद्रित माध्यम, दृश्य-श्रव्य माध्यम और स्रोत के माध्यम से दिनकर जी के बारे में निरन्तर सूचनाएँ/जानकारियाँ उपलब्ध हो रहीं हैं। उपर्युक्त तीनों ही स्रोत लोकप्रिय हैं। अखबार, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकालय, रेडियो, टेलिविजन एवं वर्ग-अध्ययन के द्वारा युवापीढ़ी दिनकर जी के बारे में जितनी रूचि दिखा रहीं है, वह आज भी उनकी लोकप्रियता का परिचायक है।

निष्कर्षः

मूल्यह्रास के इस दौर की आपाधापी वाली जिन्दगी में नैतिकता हमारे हाथ से फिसलती जा रही है। भाव यह कि जिस आदर्श को हम भारतीयों ने सभ्यता के प्रारंभ से ही पाला है, जिसके लिए हमारे पूर्वजों ने अनगिनत कुर्बानियाँ दी हैं, हमारी आजादी का इतिहास जिस आदर्श की प्राप्ति का इतिहास है, उसे एक सर्वमान्य अमिट सच्चाई समझ व स्वीकार कर हमें उन्नति के पथ पर अग्रसरित होते जाना है। दृढ़ संकल्प तथा उच्च नैतिक चरित्रवाले युवा राष्ट्र की धरोहर और भविष्य की नींव होते हैं। ऐसे युवाओं से ही देश और राज्य की प्रगति होती है। ऐसी चरित्रवान युवापीढ़ी ही हमारी आजादी को चिरंजीवी बनाए रख सकती हैं।

संदर्भ स्रोतः

पुस्तकेंः

गुप्त मन्मथनाथ, (1980), आलेख प्रकाशन।

दिनकर रामधारी सिंह; (1963), परशुराम की प्रतीक्षा, आर्यकुमार रोड, पटना-4, उदयाचल। पृ० सं०-03

दिनकर रामधारी सिंह; (1975), रश्मिरथी, पटना-16, उदयाचल। पृ० सं०-15

दिनकर रामधारी सिंह; (2002), हुंकार, राजेन्द्र नगर, पटना-16, उदयाचल। पृ० सं०- 18, 38, 39

दिनकर रामधारी सिंह; (2004), कुरूक्षेत्र, नई दिल्ली, राजपाल एण्ड सन्स। पृ० सं०-23, 25

नागेन्द्र, (1980), आस्था के चरण, नई दिल्ली, नेशनल पब्लिशिंग हाउस।

मिश्रा सुशीला; (1983), दिनकर की साहित्य दृष्टि, पटना, अनुपम प्रकाशन।

राय गोपाल; (24 अप्रैल 1975), राष्ट्रकवि दिनकर, पटना, ग्रंथ निकेतन।

श्रोतिय प्रभाकर; (2005), ज्ञानपीठ पुरस्कार (1965-2002), लोदी रोड, नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ। पृ० सं०-174

Websites :

Google.com 2011

www.hindipoetry.wordpress.com/category/ramdhari_singh_dinkar/

चाँद और कवि शीर्षक कविता से (हिन्दी कविता संग्रह) सितम्बर, 2010